Safare Madina (Hindi)

फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त 21)

सफ़रे मदीना

के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर 10 के मवाद समेत अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''सफ़रे मदीना के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए म-दनी मुज़ा-करा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **''हुरूफ़ की पहचान''** नामी चार्ट मुला-हज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (़) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन وَعْوت، اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 ´E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
14 र-जबुल मुरज्जब 1438 सि.हि./12 एप्रिल 2017 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सफ़रे मदीना के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (37 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ाके मदीना वत़न में लाना कैसा ?

सुवाल : बत़ौरे तबर्रुक "ख़ाके मदीना" वत़न में लाना कैसा है ?

जवाब : बत़ौरे तबर्रुक "ख़ाके मदीना" वत़न में लाना जाइज़ है मगर मश्व-रतन अ़र्ज़ है कि न लाई जाए । ख़ा-तमुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अक्सर उ़-लमा कहते हैं कि मदीनए मुनव्वरह और मक्कए मुकर्रमा زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ख़ाक, ईंट, ठीकरी और पथ्थर न उठाए । उ़-लमाए ह़-नफ़िय्या और

1 ..... جمع الجوامع، حرف الميم، ۷/ ۱۹۹، حدیث: ۲۲۳۵۳ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

बा'ज़ शाफ़िइय्या رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی जाइज़ भी कहते हैं। बहर सूरत अगर तोह़फ़ा (मिस्ल फल व पानी वग़ैरा) जिस से अहले वत़न को ख़ुशी हो बे तकल्लुफ़ हमराह ले तो बेहतर है। सफ़र से अहलो इ़याल के लिये तोह़फ़ा लाना सह़ीह़ ख़बरों (या'नी ह़दीसों) से साबित है।[1]

मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की ख़ाक, ईंट, ठीकरी और पथ्थर वग़ैरा न उठाने की वज्ह येह है कि येह तमाम चीज़ें भी सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करती हैं बल्कि हर मुक़द्दस मक़ाम से निस्बत रखने वाले कंकर व पथ्थर वग़ैरा उस मक़ाम से जुदा होना गवारा नहीं करते जैसा कि ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : जमादात (पथ्थर और पहाड़ वग़ैरा) के अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बन्दों से मह़ब्बत करने के वस्फ़ (या'नी ख़ूबी) का इन्कार नहीं किया जा सकता जैसा कि खजूर का तना सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) में रोया यहां तक कि लोगों ने उस के रोने की आवाज़ भी सुनी। इसी त़रह़ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का एक पथ्थर सरकार عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल होने से पहले सलाम पेश किया करता था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा त़य्यिबी

مدینہ

1 ...... جذب القلوب، ص ۲۲۶ النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی مرکز الاولیا لاہور

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : उहुद पहाड़ और मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا के तमाम अज्ज़ा सरकार عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से महब्बत करते हैं और आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से जुदा होने की सूरत में आप की मुलाक़ात के लिये गिर्या करते हैं येह ऐसी बात है कि जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता।[1] लिहाज़ा जाइज़ होने के बा वुजूद मक़ामाते मुक़द्दसा की ख़ाक और कंकर वग़ैरा तबर्रुकात न उठाए जाएं येही बेहतर है।

खजूर का तना फ़िराक़े रसूल में रो दिया

सुवाल : मक़ामाते मुक़द्दसा से निस्बत रखने वाले कंकर व पथ्थर वहां से जुदा होना गवारा न करते हों इस क़िस्म के अगर वाक़िआ़त हों तो बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : खजूर के तने का सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ में रोने का वाक़िआ़ बड़ा ही मश्हूर है। "मिम्बरे मुनव्वर" बनने से पहले सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर के एक तने से टेक लगा कर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाते थे। जब मिम्बरे अत़्हर बनाया गया और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया तो वोह तना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) में फट गया और चीख़ें मार कर रोने और गाभन (या'नी ह़ामिला) ऊंटनी की त़रह़ चिल्लाने लगा, येह ह़ाल देख कर तमाम ह़ाज़िरीन

मदينه

1 ...... مِرقاةُ الْمفاتیح، کتابُ المناسک، باب حرم المدینۃ حرسھا اللہ تعالیٰ، الفصل الاوّل، ۵/۶۲۶، تحت الحدیث: ۲۷۴۵ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

भी बे इख़्तियार रोने लगे। सरकारे बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे मुनव्वर से उतर कर उस खजूर के तने पर दस्ते अन्वर फैर कर फ़रमाया : "तू चाहे तो तुझे तेरी जगह छोड़ दूं जिस ह़ालत में तू पहले था वैसा ही हो जाए, अगर तू चाहे तो जन्नत में लगा दूं ताकि **औलियाउल्लाह** तेरा फल खाएं और तू हमेशा रहे।" लम्ह़े भर के बा'द सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर फ़रमाया : "इस ने जन्नत इख़्तियार की।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى जब येह वाक़िआ़ बयान करते तो ख़ूब रोते और फ़रमाते : ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! जब खजूर का एक बे जान तना फ़िराक़े रसूल (या'नी रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई) में रो सकता है तो तुम क्यूं नहीं रो सकते ?[1]

रोने वाला संगरेज़ा

(**शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) चन्द साल क़ब्ल मदीना रोड पर "नवारिया" के क़रीब मक़ामे सरिफ़ पर वाक़ेअ़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर मैं ने ह़ाज़िरी दी और चन्द मुबारक संगरेज़े उठा कर कलिमा शरीफ़ पढ़ कर उन को अपने ईमान का गवाह किया और इस्लामी भाइयों से कहा

1 ..... وفاء الوفاء، الفصل الرابع فی خبر الجذع...الخ، ۱/۳۸۸-۳۹۰ ملخصاً دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

कि इन को तबर्रुकन पाकिस्तान में इस्लामी भाइयों को तोहूफ़तन पेश करूंगा। जब अपनी क़ियाम गाह पर आया तो एक संगरेज़ा (या'नी पथ्थर का टुकड़ा) एक जगह से नम हो गया था, कुछ देर बा'द उस की नमी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया। मैं ने इस्लामी भाइयों से कहा : ग़ालिबन येह उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़िराक़ में रो रहा है, اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इन तमाम संगरेज़ों को अम्मीजान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास पहुंचा दूंगा। ह़ैरत बालाए ह़ैरत येह कि कुछ ही देर में वोह ख़ुश्क हो गया या'नी ढारस मिलने पर उस ने रोना बन्द कर दिया। बिल आख़िर मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के दरबार में ह़ाज़िरी दी और उन संगरेज़ों को बसद अदब वहां रख दिया और अम्मीजान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मुआ़फ़ी भी मांगी।

मुज़्दलिफ़ा की अश्कबार कंकरियां

मन्क़ूल है कि एक बुढ़िया ह़ज पर गई। रम्ये जमरात (या'नी शैत़ान को कंकरियां मारने) के बा'द मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ की चन्द कंकरियां बच गईं, वोह उन्हें बत़ौरे यादगार अपने साथ वत़न लेती आई और एक पाक कपड़े में लपेट कर अदब के साथ उन्हें अल्मारी में रख दिया। एक दिन उस की नज़र कंकरियों की जगह पर पड़ी तो देखा कि वहां नमी है। उस ने मु-तअ़ज्जिब हो कर कपड़े से कंकरियां निकालीं तो येह देख कर उस की ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि वोह पानी उन कंकरियों

www.dawateislami.net

से निकल रहा था। घबरा कर किसी सुन्नी आ़लिम से राबिता़ किया तो उन्हों ने फ़रमाया कि येह कंकरियां मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ की मुक़द्दस सर ज़मीन के फ़िराक़ में रो रही हैं इन को वहीं भिजवा दें चुनान्चे किसी ह़ाजी साहिब के ज़रीए उन को मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ पहुंचा दिया गया।

ख़ाके मदीना का तोह़फ़ा

सुवाल : वत़न में ख़ाके मदीना तोह़फ़े में मिलने पर आप क्या करते हैं ?

जवाब : (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) अगर कोई वत़न में ख़ाके मदीना तोह़फ़े में दे तो अव्वलन क़बूल करने से ही मा'ज़िरत कर लेता हूं कि मैं इस का अदब नहीं कर पाऊंगा। अगर ले भी लूं तो कोशिश येही होती है कि किसी ज़ाइरे मदीना के ज़रीए इस ख़ाके पाक को दोबारा मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंचा दिया जाए।

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आ़लम
उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

तबर्रुकात का अदब कीजिये

सुवाल : क्या मदीनए पाक से कोई भी चीज़ बत़ौरे तबर्रुक वत़न में नहीं ला सकते ?

जवाब : मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से तबर्रुकात ला सकते हैं मगर उन का अदब मल्ह़ूज़ रखा जाए। (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) मुझे मदीनए पाक

www.dawateislami.net

की चीज़ें म-सलन लिबास, चप्पल और बरतन वग़ैरा वत़न में इस्ति'माल करते हुए बे अ-दबी का ख़ौफ़ ग़ालिब रहता है, यहां तक कि मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की खजूरें भी मुझ से वत़न में नहीं खाई जातीं क्यूं कि हाथ और मुंह पर खजूर के अज्ज़ा लग जाते हैं फिर हाथ धोने और कुल्ली करने में वोह अज्ज़ा गन्दी नाली में बह जाने का ख़ौफ़ रहता है। बस ! इन्हीं ख़यालात की वज्ह से मैं मदीनए पाक की खजूरें इस्ति'माल करने से बचता रहता हूं ह़ालां कि मुझे वत़न में बहुत सारी मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की खजूरें मिलती रहती हैं तो मैं उन्हें किसी और के लिये आगे बढ़ा देता हूं।

बहर ह़ाल मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की खजूरें लाने और खाने में कोई ह़रज नहीं। अगर कोई मुसल्मान खाता है तो उस के बारे में येह नहीं कह सकते कि **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ येह तौहीन की निय्यत से खजूरें खाता है और अगर कोई नहीं खाता तो उसे भी बुरा भला नहीं कह सकते कि येह **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ इन मुक़द्दस अश्या से नफ़रत करता है क्यूं कि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर एक की निय्यत व इरादे से ख़बरदार है। मेरे इस फ़े'ल पर शरअ़न कोई गिरिफ़्त भी नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

त़यबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इ़श्क़ के बन्दे हैं क्यूं बात बढ़ाई है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

नफ़्ली ह़ज अफ़्ज़ल है या स-द-क़ए नफ़्ल ?

सुवाल : नफ़्ली ह़ज अफ़्ज़ल है या स-द-क़ए नफ़्ल ?

जवाब : नफ़्ली स-दक़े से नफ़्ली ह़ज अफ़्ज़ल है बशर्ते कि नफ़्ली स-दक़े की ज़ियादा ह़ाजत न हो जैसा कि फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **दुर्रे मुख़्तार** में है : मुसाफ़िर ख़ाना बनाना ह़ज्जे नफ़्ल से अफ़्ज़ल है और ह़ज्जे नफ़्ल स-दक़े से अफ़्ज़ल या'नी जब कि इस की ज़ियादा ह़ाजत न हो वरना ह़ाजत के वक़्त स-दक़ा ह़ज से अफ़्ज़ल है।[1] इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی नक़्ल फ़रमाते हैं : एक साह़िब हज़ार अश्रफ़ियां ले कर ह़ज को जा रहे थे कि एक सय्यिदानी साह़िबा तशरीफ़ लाईं और उन्हों ने अपनी ज़रूरत ज़ाहिर फ़रमाई । उन्हों ने सारी अश्रफ़ियां सय्यिदानी साह़िबा को नज़्र कर दीं और यूं ह़ज को न जा सके। जब वहां के ह़ुज्जाज ह़ज से पलटे तो हर ह़ाजी उन से कहने लगा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का ह़ज क़बूल फ़रमाए । उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि क्या मुआ़-मला है, मैं तो ह़ज की सआ़दत से मह़रूम रहा हूं मगर येह लोग ऐसा क्यूं कह रहे हैं ? ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : क्या तुम्हें लोगों की बात से तअ़ज्जुब हुवा ? अ़र्ज़ की : जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

---

1 ..... बहारे शरीअ़त, 1/1216, ह़िस्सा : 6, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तुम ने मेरे अहले बैत की ख़िदमत की उस के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी सूरत का एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाया जिस ने तुम्हारी त़रफ़ से ह़ज किया और क़ियामत तक ह़ज करता रहेगा।(1)

100 नफ़्ली ह़ज से अफ़्ज़ल अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर नसीह़त का त़लब गार हुवा, वोह (नफ़्ली) सफ़रे ह़ज का इरादा रखता था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ख़र्च के लिये कितना माल रखा है ? अ़र्ज़ की : दो हज़ार दिरहम। फ़रमाया : ह़ज करने से तेरा क्या मक़्सद है, दुन्या से दूरी, **बैतुल्लाह** शरीफ़ की ज़ियारत या रिज़ाए इलाही का ह़ुसूल ? अ़र्ज़ की : रिज़ाए इलाही का ह़ुसूल। फ़रमाया : क्या तुम्हें अगर दो हज़ार दिरहम ख़र्च करने पर घर बैठे रिज़ाए इलाही ह़ासिल हो जाए और तुम्हें इस का यक़ीन भी हो तो क्या तुम ऐसा करोगे ? उस ने कहा : हां ! फ़रमाया : वापस लौट जा और दो हज़ार दिरहम ऐसे 10 अफ़राद को दे जिन में कोई क़र्ज़दार हो तो अपने क़र्ज़ से ख़लासी पाए, फ़क़ीर हो तो अपनी ह़ालत दुरुस्त करे, इ़याल दार हो तो अपने बाल बच्चों की ज़रूरत पूरी करे, यतीम की परवरिश करने वाला हो तो यतीम को ख़ुश करे अगर तेरा दिल एक ही शख़्स को देना चाहे तो उसे ही दे देना कि मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना,

مدینہ

1 ...... رَدُّالْمُحتار، کتاب الحج، مطلب فی تفضیل الحج علی الصدقۃ، ۴/ ۵۵ دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

मज़्लूम की फ़रियाद रसी करना, उस की तक्लीफ़ को दूर करना और कमज़ोर की मदद करना 100 नफ़्ली ह़ज से अफ़्ज़ल है। जा ! और इसे वैसे ही ख़र्च कर जैसे मैं ने कहा है वरना जो तेरे दिल में है वोह बता दे। उस ने कहा : ऐ अबू नस्र ! मेरे दिल में सफ़र का ही इरादा है। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुस्कुराए और उस पर शफ़्क़त करते हुए फ़रमाया : जब तिजारत और मुश्तबा ज़राएअ़ से माल जम्अ़ होता है तो नफ़्स ख़र्च तो अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ करता है लेकिन नेक आ'माल को आड़ बना लेता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़सम इर्शाद फ़रमाई है कि वोह सिर्फ़ मुत्तक़ीन के आ'माल क़बूल फ़रमाएगा।[1]

रिज़ाए इलाही के साथ साथ दिखावे के लिये अ़मल करना

सुवाल : किसी नेक अ़मल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के साथ साथ लोगों के उस अ़मल पर मुत्त़लअ़ होने की ख़्वाहिश करना कैसा है ?

जवाब : कोई भी नेक अ़मल हो उस में रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत होनी चाहिये, लोगों को दिखाने, शोहरत पाने और अपनी वाह वा करवाने की निय्यत से नेक अ़मल करना रियाकारी है और रियाकारों के लिये तबाहकारी है। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

1 ..... قوت القلوب، الفصل السادس والعشرون، ۱/۱۶۵ دار الكتب العلمية بيروت

www.dawateislami.net

मैं मौक़िफ़े ह़ज में खड़ा होता हूं और मक़्सूद **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा होती है और मेरी येह भी ख़्वाहिश होती है कि मेरा यहां खड़ा होना देखा जाए (या'नी लोग मुझे देख लें) । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स की बात सुन कर कोई जवाब न दिया ह़त्ता कि येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾ (1) (پ۱۶، الکھف:۱۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे ।

ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन ज़ियाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से इस आयत का मत़लब पूछा तो फ़रमाया : येह मोमिन के बारे में नाज़िल हुई । मैं ने कहा : क्या वोह **अल्लाह** तआ़ला के साथ किसी को शरीक ठहराता है ? फ़रमाया : नहीं, लेकिन अ़मल के लिये शिर्क करता है क्यूं कि वोह उस अ़मल से **अल्लाह** तआ़ला और लोगों की रिज़ा चाहता है। इस वज्ह से वोह अ़मल क़बूल नहीं होता ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद बिन अबू फ़ज़ाला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शको शुबा से पाक दिन या'नी

مدینہ

1 ..... دُرِّ منثور، پ۱۶، الکھف، تحت الآیۃ: ۱۱۰، ۵/۴۶۹ دار الفکر بیروت

2 ..... دُرِّ منثور، پ۱۶، الکھف، تحت الآیۃ: ۱۱۰، ۵/۴۷۰ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

क़ियामत में अव्वलीनो आख़िरीन को जम्अ़ करेगा तो एक मुनादी निदा करेगा : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किये जाने वाले अ़मल में किसी को शरीक किया वोह उसी के पास अपना सवाब तलाश करे क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शु-रका के शिर्क से बे नियाज़ है ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लोगों को अपने आ'माल दिखाने, सुनाने और अपनी शोहरत पाने का शौक़ बहुत बुरा है और येह शैत़ान के वारों में से एक वार है । शैत़ाने लईन अव्वलन तो किसी को नेकी की त़रफ़ माइल ही नहीं होने देता, अगर कोई । उस के वार से बच कर नेक अ़मल करने में काम्याब हो भी जाए तो रियाकारी, तकब्बुर, हुब्बे जाह और शोहरत वग़ैरा में मुब्तला कर के उस के आ'माल बरबाद करने की कोशिश करता है लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि वोह शैत़ान की इन चालों को नाकाम बनाते हुए ख़ालि-सतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये अ़मल करे । हां ! ऐसा शख़्स जो लोगों का पेश्वा हो, लोग उस से अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखते और नेक आ'माल में उस की पैरवी करते हों तो ऐसे शख़्स के लिये लोगों की तरग़ीब के लिये अपने आ'माल को ज़ाहिर करना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पोशीदा इबादत अ़लानिया इबादत से अफ़्ज़ल है और जिस की लोग पैरवी करते हों

مدینہ

1 ..... مُسْنَدِ اِمَام اَحمد، مسند المکیین، حدیث أبی سعید بن أبی فضالة، ۵/۳۶۹، حدیث: ۱۵۸۳۸ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

उस की अ़लानिया इबादत पोशीदा इबादत से अफ़्ज़ल है ।[1]

आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करना

सुवाल : आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करना या शोहरत चाहना कैसा है ?

जवाब : दुन्यवी ग़रज़ के लिये नेक अ़मल करना या नेक अ़मल करने के बा'द उसे दुन्या त़-लबी और शोहरत का ज़रीआ़ बनाना مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दीन फ़रोशी और अक्सर सूरतों में रियाकारी है जिस में जहन्नम की ह़क़दारी है जैसा कि आज कल बा'ज़ लोग ह़ज व उ़म्रह कर आते हैं तो बिला ज़रूरत जगह जगह अपने ह़ज व उ़म्रह का ए'लान करते फिरते हैं । ह़दीस शरीफ़ में है : जो आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करे उस का चेहरा मस्ख़ कर दिया जाए और उस का ज़िक्र मिटा दिया जाए और उस का नाम दोज़ख़ियों में लिखा जाए ।[2]

आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करने वाले एक नादान आक़ा और उस के दाना ग़ुलाम की इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये और इ़ब्रत के म-दनी फूल चुनिये चुनान्चे ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : एक ग़ुलाम और आक़ा ह़ज कर के पलटे, राह में नमक न रहा, न ख़र्च था कि मोल (क़ीमतन) लेते, एक मन्ज़िल पर आक़ा ने ग़ुलाम से कहा : बक़्क़ाल (सब्ज़ी फ़रोश/खाने पीने का सामान बेचने वाले) से थोड़ा सा नमक येह कह कर ले

مدینہ

1 ...... شعبُ الایمان، باب فی السرور بالحسنۃ... الخ، ۵/۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

2 ...... کنز العمّال، کتاب الأخلاق، الجزء: ۳، ۲/۹۳، حدیث: ۷۴۷۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

आओ कि "मैं ह़ज से आया हूं।" चुनान्चे वोह गया और येह कह कर थोड़ा सा नमक ले आया। दूसरी मन्ज़िल पर आक़ा ने फिर भेजा और कहा : इस बार यूं कहो कि "मेरा आक़ा ह़ज से आया है।" चुनान्चे इस बार भी गुलाम येह कह कर थोड़ा सा नमक ले आया। तीसरी मन्ज़िल पर आक़ा ने फिर भेजना चाहा, तो गुलाम (जो कि ह़क़ीक़तन आक़ा बनने के क़ाबिल था उस) ने जवाब दिया : परसों नमक के चन्द दानों के बदले अपना ह़ज बेचा, कल आप का बेचा, आज किस का बेच कर लाऊं ?(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई वोह गुलाम बहुत दाना था, उस ने अपने आक़ा और आज कल के हर ह़ाजी साहि़ब को कितनी ज़बर दस्त और इ़ब्रत अंगेज़ बात बताई कि बिला ज़रूरत अपने ह़ज का ए'लान कर के नमक वग़ैरा ह़ासिल करने से कहीं ऐसा न हो कि ह़ज ही बरबाद हो जाए। अलबत्ता येह बात ज़ेह्न नशीन रहे कि अगर किसी ने रियाकारी के लिये ह़ज किया तो उस का फ़र्ज़ अदा हो जाएगा मगर रियाकारी का गुनाह होगा, ऐसे ह़ाजी को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास की दौलत से मालामाल फ़रमाए और रियाकारी की तबाहकारी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए।(2) اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

مدینہ

1...... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 281 मुलख़्ख़सन, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

2...... मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 106 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "नेकियां छुपाओ" का मुत़ा-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

पैदल सफ़रे ह़ज की फ़ज़ीलत

सुवाल : क्या पैदल सफ़रे ह़ज की भी कोई फ़ज़ीलत है ?

जवाब : ह़ज अगर्चे सुवारी वग़ैरा की इस्तित़ाअ़त होने पर ही फ़र्ज़ होता है मगर ताहम पैदल सफ़रे ह़ज का बहुत ज़ियादा सवाब है। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا शदीद बीमार हुए तो उन्हों ने अपने बेटों को बुलाया और जम्अ़ कर के फ़रमाया कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो मक्का से ह़ज के लिये पैदल चल कर जाए और मक्का लौटने तक पैदल ही चले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर क़दम के बदले सात सो नेकियां लिखता है और उन में हर नेकी ह़रम में की गई नेकियों की त़रह़ है।" उन से पूछा गया : "ह़रम की नेकियां क्या हैं ?" फ़रमाया : "उन में से हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है।"(1)

ह़ज व उ़मरे के कारवान और दा'वते इस्लामी

सुवाल : पाकिस्तान में कारोबारी त़ौर पर मुख़्तलिफ़ नामों से ह़ज व उ़मरे के लिये कारवान तय्यार किये जाते हैं उन में बा'ज़ का तशख़्ख़ुस दा'वते इस्लामी वाला होता है, क्या दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से उन्हें कुछ ह़िमायत ह़ासिल है ?

जवाब : ह़ज व उ़मरे के मुख़्तलिफ़ नामों से बनाए जाने वाले किसी भी कारवान को ता दमे तह़रीर म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से किसी

1 ..... مستدرک حاکم، کتاب المناسک، فضیلۃ الحج ماشیاً، ۲/۱۱۴، حدیث: ۱۷۳۵ دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

भी क़िस्म की कोई हिमायत हासिल नहीं । ऐसे लोगों को चाहिये कि वोह अपना तशख़्ख़ुस दा'वते इस्लामी वाला न बनाएं ताकि उन की बे एह़तियातियों से लोग दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से बद-ज़न न हों । बहर ह़ाल ऐसे इदारे चलाने वाले और उन के ज़रीए ह़ज व उ़म्रे पर जाने वाले अपने मुआ़-मलात के ख़ुद ही ज़िम्मादार हैं ।

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का पैग़ाम ता दमे तह़रीर दुन्या के तक़रीबन 200 ममालिक में पहुंच चुका है । लाखों लाख मुसल्मान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस म-दनी तह़रीक से वाबस्ता हैं। अब अगर कोई दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस अपना कर किसी भी क़िस्म की बद उ़न्वानी का मुर-तकिब हो तो इस बिना पर पूरी तह़रीक को बुरा भला कहना और म-दनी माह़ोल से दूर हो जाना इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है क्यूं कि एक या चन्द अफ़राद की ग़-लती की वज्ह से सारी तह़रीक को बुरा भला नहीं कहा जा सकता । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना ख़ौफ़, अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा इ़श्क़ और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए और हर उस अ़मल से बचाए जिस से दा'वते इस्लामी की दीनी ख़िदमात को नुक़्सान पहुंचे । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह ! इस से पहले, ईमां पे मौत दे दे
नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

हवाई जहाज़ में गुनाहों का ख़त़रा

सुवाल : क्या हवाई जहाज़ में भी गुनाहों का ख़त़रा होता है ?

जवाब : जी हां ! हवाई जहाज़ में भी गुनाहों का ख़त़रा रहता बल्कि कई गुना बढ़ जाता है । ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَااللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का सफ़र चूंकि बड़ा ही मुबारक सफ़र है लिहाज़ा शैत़ान किसी सूरत में भी नहीं चाहता कि येह सफ़र गुनाहों से ख़ाली हो इस लिये वोह लोगों को गुनाहों में मुब्तला करने की भरपूर कोशिश करता है और बेश्तर लोग भी नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर इस मुबारक सफ़र में भी गुनाहों का सिल्सिला जारी रखे होते हैं लिहाज़ा हुज्जाजे किराम को चाहिये कि अपनी निगाहों की ह़िफ़ाज़त करें और नमाज़ों का भी एहतिमाम करें । हुज्जाज को मुस्लिम ग़ैर मुस्लिम फ़्लाइट्स में सफ़र करना पड़ता है तो इस ह़वाले से नमाज़ के मसाइल म-सलन बुलन्दी पर अवक़ाते नमाज़ की मा'लूमात, क़िब्ला रुख़ जानने, त़य्यारे में क्या खा सकते हैं और क्या नहीं खा सकते ? नीज़ इस्तिन्जा ख़ाने के इस्ति'माल वग़ैरा की एह़तियात़ का इ़ल्म होना भी ज़रूरी है ।

बद निगाही करने और करवाने वालियां

सुवाल : बद निगाही करने और करवाने वालियों के बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : क़स्दन बद निगाही करने और करवाने वालियां गुनहगार और अ़ज़ाबे नार की ह़क़दार हैं अह़ादीसे मुबा-रका में इन के लिये सख़्त वईदें आई हैं चुनान्चे सरवरे ज़ीशान, मक्की म-दनी

www.dawateislami.net

सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : देखने वाले पर और उस पर जिस की त़रफ़ नज़र की गई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत ।[1] लिहाज़ा कभी भी बद निगाही न कीजिये, अगर अचानक नज़र पड़ भी जाए तो फ़ौरन नज़र फैर लीजिये जैसा कि ह़दीसे पाक में है ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अचानक नज़र पड़ जाने के मु-तअ़ल्लिक़ हुक्म दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म दिया कि फ़ौरन नज़र फैर लो ।[2]

मा'लूम हुवा कि बिला क़स्द पड़ जाने वाली पहली नज़र मुआ़फ़ है जब कि फ़ौरन नज़र फैर ली जाए । हां ! अगर बिला क़स्द नज़र पड़ी लेकिन देखते ही रहे या नज़र हटा कर फिर दोबारा देखा तो येह ना जाइज़ है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से फ़रमाया : एक नज़र के बा'द दूसरी नज़र न करो (या'नी अगर अचानक बिला क़स्द किसी औ़रत पर नज़र पड़ जाए तो फ़ौरन नज़र हटा लो और दोबारा नज़र न करो) कि पहली नज़र जाइज़ है और दूसरी नज़र जाइज़ नहीं ।[3]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नीची नीची मुबारक नज़रों की ह़या का सदक़ा हमें भी अपनी

---

1 ..... شعب الایمان، باب الحیاء، فصل فی الحمام، ۶/۱۶۲، حدیث: ۷۷۸۸

2 ..... مُسلِم، کتاب الآداب، باب نظر الفجاۃ، ص۹۱۷، حدیث: ۵۶۴۴ دار الکتاب العربی بیروت

3 ..... ابوداود، کتاب النکاح، باب ما یؤمر بہ... الخ، ۲/۳۵۸، حدیث: ۲۱۴۹ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

निगाहों को नीची रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

मस्जिदैने करीमैन में दुन्यवी बातें और शोरो ग़ुल करना

सुवाल : कई ह़ुज्जाजे किराम मस्जिदैने करीमैन में दुन्यवी बातें करते, शोरो ग़ुल मचाते और क़ह्क़ह़े लगाते नज़र आते हैं, उन के बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : मसाजिद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर हैं, इन का अ-दबो एह़तिराम करना और इन्हें हर उस चीज़ से बचाना जिस के लिये येह नहीं बनाई गईं ज़रूरी है । मसाजिद में दुन्यवी बातें करने, शोरो ग़ुल मचाने और क़ह्क़ह़े लगाने से इन का तक़द्दुस पामाल होता है और येह ऐसे उमूर हैं जिन के लिये मसाजिद नहीं बनाई गईं लिहाज़ा इन के इरतिकाब करने वालों के लिये अह़ादीसे मुबा-रका में सख़्त वईदें आई हैं चुनान्चे मस्जिद में हंसने के मु-तअ़ल्लिक़ सुल्त़ाने इन्सो जान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है ।[1] आवाज़ बुलन्द करने वालों के लिये इर्शाद फ़रमाया : जो किसी को मस्जिद में ब आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने तो वोह कहे : لَا رَدَّھَا اللہُ عَلَیْکَ فَاِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِھٰذَا या'नी

1 ..... جامع صغیر، حرف الضاد، ص ۳۲۲، حدیث: ۵۲۳۱ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोह गुमशुदा शै तुझे न मिलाए क्यूं कि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गईं।[1] जो मस्जिद में दुन्या की बातें करे **अल्लाह** तआ़ला उस के चालीस साल के आ'माल अकारत (ज़ाएअ़) फ़रमा दे।[2] मस्जिद में मुबाह़ बातें नेकियों को इस त़रह़ खा जाती हैं जिस त़रह़ आग लकड़ी को।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मसाजिद में दुन्यवी बातें करना, हंसना और आवाज़ें बुलन्द करना वग़ैरा आख़िरत के लिये किस क़दर तबाह कुन हैं ! मस्जिदैने करीमैन में ऐसा करने वाले हुज्जाज वग़ैरा को डर जाना चाहिये कि जब आ़म मसाजिद के तक़द्दुस को पामाल करने की येह वई़दें हैं तो मस्जिदैने करीमैन की बे हुरमती की वई़दें तो इन मुक़द्दस मक़ामात की अ़ज़मत की वज्ह से और ज़ियादा सख़्त हैं क्यूं कि मस्जिदैने करीमैन तो दुन्या की तमाम मसाजिद से अफ़्ज़लो आ'ला हैं जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 649 पर है : सब मस्जिदों से अफ़्ज़ल मस्जिदे ह़राम शरीफ़ है, फिर मस्जिदे न-बवी, फिर मस्जिदे क़ुद्स, फिर मस्जिदे क़ुबा, फिर और जामेअ़ मस्जिदें, फिर मस्जिदे मह़ल्ला, फिर मस्जिदे शारेअ़।

مدینہ

1 ...... مُسلِم، کتابُ المساجد... الخ، باب النھی عن نشد الضالۃ... الخ، ص ۲۲۴، حدیث: ۱۲۶۰

2 ...... غمز عیون البصائر، الفن الثالث، القول فی أحکام المسجد، ۱/ ۱۹۰ بابُ المدینہ کراچی

3 ...... الاشباہ والنظائر، الفن الثالث، القول فی أحکام المسجد، ص ۳۲۱ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

मस्जिदैने करीमैन में खाना पीना कैसा ?

सुवाल : मस्जिदैने करीमैन (या'नी मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे न-बवी शरीफ़) में खाना पीना कैसा है ?

जवाब : मस्जिदैने करीमैन (या'नी मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे न-बवी शरीफ़) हों या कोई और मस्जिद इन में खाना पीना और सोना सिवाए मो'तकिफ़ के किसी और के लिये शरअ़न जाइज़ नहीं। अगर किसी को मस्जिद में खाने पीने और सोने की ह़ाजत है तो उसे चाहिये कि वोह नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले तो ज़िम्नन खाना पीना और सोना भी जाइज़ हो जाएगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सह़ीह़ व मो'तमद येह है कि मस्जिद में खाना पीना, सोना सिवा मो'तकिफ़ के किसी को जाइज़ नहीं, मुसाफ़िर या ह़-ज़री (मुक़ीम) अगर चाहता है तो ए'तिकाफ़ की निय्यत क्या दुश्वार है और इस के लिये न रोज़ा शर्त़ न कोई मुद्दत मुक़र्रर है, ए'तिकाफ़े नफ़्ल एक साअ़त का (भी) हो सकता है।[1]

मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिर है कि मस्जिदें सोने खाने पीने को नहीं बनीं तो ग़ैरे मो'तकिफ़ को इन में इन अफ़्आ़ल की इजाज़त नहीं और बिला शुबा अगर इन अफ़्आ़ल का दरवाज़ा खोला जाए तो ज़मानए फ़ासिद है और क़ुलूब अ-दबो हैबत से आ़री, मस्जिदें चोपाल हो जाएंगी और इन की बे ह़ुरमती होगी,

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 8/95, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

وَكُلُّ مَا اُدِّیَ اِلٰی مَحْظُوْرٍ مَحْظُوْرٌ (और हर वोह शै जो मम्नूअ़ तक पहुंचाए मम्नूअ़ हो जाती है) ।[1]

मो'तकिफ़ को भी मस्जिद में खाने पीने की इसी सूरत में इजाज़त है कि इतना ज़ियादा खाना न हो जो नमाज़ की जगह घेरे और न ही खाने पीने की किसी चीज़ से मस्जिद आलूदा हो वरना जाइज़ नहीं चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 8 सफ़हा 94 पर है : "मस्जिद में इतना कसीर खाना लाना कि नमाज़ की जगह घेरे और ऐसा अक्लो शुर्ब (या'नी खाना पीना) जिस से इस की तल्वीस हो मुत्लक़न ना जाइज़ है अगर्चे मो'तकिफ़ हो।" नीज़ **रद्दुल मुह़्तार** में है : ज़ाहिर येही है कि खाना पीना जब कि मस्जिद को आलूदा न करे और न मस्जिद की जगह घेरे तो येह सोने की त़रह़ (जाइज़) है क्यूं कि मस्जिद को साफ़ सुथरा रखना वाजिब है ।[2] जब मस्जिद में खाना पीना इन दोनों बातों से ख़ाली हो तो मो'तकिफ़ को बिल इत्तिफ़ाक़ बिला कराहत जाइज़ है ।

सालन में पकी हुई इलायची खाने का हुक्म

सुवाल : अगर इलायची सालन वग़ैरा में पका ली जाए तो क्या ऐसा सालन मोह़रिम के लिये खाना जाइज़ है ?

जवाब : अगर सालन या मश्रूबात वग़ैरा में ख़ुश्बू जैसे ज़ा'फ़रान या इलायची वग़ैरा को मिला कर पका लिया गया तो मोह़रिम के

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 8/93

2 ..... ردالمحتار، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ۳/۵۰۷

www.dawateislami.net

लिये उस का खाना, पीना जाइज़ है और खाने या पीने वाले मोह़रिम (एह़राम वाले) पर कोई दम या स-दक़ा[1] नहीं क्यूं कि पकाने से इन का वुजूद खाने में मिल कर ख़त्म हो जाता है लिहाज़ा अब इन के वुजूद का ए'तिबार न रहा और इन का खाना, पीना मोह़रिम के लिये जाइज़ हो गया।[2]

ह़ालते एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल

सुवाल : ह़ालते एह़राम में साबुन से हाथ धो सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ह़ालते एह़राम में साबुन से हाथ धो सकते हैं। ह़िजाज़े मुक़द्दस के होटलों में उ़मूमन ख़ुश्बू वाला साबुन रखा होता है उ़-लमाए किराम كَثَّرَ هُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस के इस्ति'माल को भी जाइज़ क़रार दिया है लिहाज़ा मोह़रिम के लिये ख़ुश्बूदार साबुन के इस्ति'माल करने में कोई ह़रज नहीं।[3]

ह़ज के अह़काम सीखना फ़र्ज़ है

सुवाल : क्या ह़ज करने वालों के लिये ह़ज के अह़काम सीखना ज़रूरी है ?

मदीना

1..... **दम :** या'नी एक बकरा। (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाय या ऊंट का सातवां ह़िस्सा सब शामिल हैं।) **स-दक़ा :** या'नी स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार। आज कल के ह़िसाब से स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार 2 किलो में 80 ग्राम कम गन्दुम या उस का आटा या उस की रक़म या उस के दुगने जव या खजूर या उस की रक़म है।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2..... एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन, स. 23 मुलख़्ख़सन, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

3..... मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ रिसाले "एह़राम और ख़ुश्बूदार साबुन" का मुता-लआ़ कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

जवाब : जी हां ! ह़ज करने वालों के लिये ह़ज से मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी मसाइल व अह़काम सीखना फ़र्ज़ है । ह़दीसे पाक में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है ।(1) इस ह़दीसे पाक से स्कूल कॉलेज की मुरव्वजा दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इ़ल्म मुराद है लिहाज़ा सब से पहले इस्लामी अ़क़ाइद का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द नमाज़ के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ किस त़रह़ दुरुस्त होती है और किस त़रह़ टूट जाती है) फिर र-मज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी हो तो जिस पर रोज़े फ़र्ज़ हों उस के लिये रोज़ों के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये ज़कात के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ ह़ज फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, निकाह़ करना चाहे तो इस के, ताजिर को तिजारत के, ख़रीदार को ख़रीदने के, नोकरी करने वाले और नोकर रखने वाले को इजारे के, وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है । इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी फ़राइज़) म-सलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद, बद गुमानी, बुग़्ज़ो कीना, शमातत (या'नी किसी की मुसीबत पर ख़ुश होना) वग़ैरहा और

مدینہ

1 ...... اِبن ماجه، باب فَضْلِ الْعُلَمَاءِ وَالْحَثِّ عَلٰى طَلَبِ الْعِلْمِ، ۱/۱۴۶، حديث: ۲۲۴ دار المعرفة بيروت

www.dawateislami.net

इन का इ़लाज सीखना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है ।(1)

अक्सर ह़ज व उ़म्रह पर जाने वाले लोग ह़ज व उ़म्रह के अह़काम पढ़ते ही नहीं अगर पढ़ या सुन लें तो भी ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी के बाइ़स भूल जाते हैं और इस क़दर अग़लात़ की कसरत करते हैं कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ ! गुनाहों पर गुनाह और कफ़्फ़ारों पर कफ़्फ़ारे वाजिब होते चले जाते हैं मगर ह़क़ीक़ी नदामत न गुनाहों से बचने का सह़ीह़ मा'नों में ज़ेह्न और न ही कफ़्फ़ारों की अदाएगी के लिये रक़म ख़र्च करने का जिगर । याद रखिये ! जहालत (या'नी न जानना) उ़ज़्र नहीं बल्कि जहालत बज़ाते ख़ुद गुनाह है लिहाज़ा जिस पर नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज फ़र्ज़ है उस के लिये इन के मु-तअ़ल्लिक़ा ज़रूरी अह़कामात का सीखना भी फ़र्ज़ है । जो ख़ुद अ़क़ाइदे सह़ीह़ा और ह़ज के मसाइले ज़रूरिय्या का इ़ल्म नहीं रखता उसे तन्हा या अ़वामुन्नास के क़ाफ़िले में सफ़रे ह़ज करने के बजाए किसी क़ाबिले इ़त्मीनान मुत्तक़ी और मोह़तात़ फ़िद्दीन मु-तसल्लिब सुन्नी आ़लिम के हमराह सफ़र करना चाहिये ।(2)

1..... नेकी की दा'वत, स. 136, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

2..... ह़ज व उ़म्रह के अह़काम सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल के छटे ह़िस्से और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तसानीफ़ "रफ़ीकुल ह़-रमैन" और "रफ़ीकुल मो'तमिरीन" का मुत़ा-लआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन किताबों का मुत़ा-लआ़ सफ़रे ह़ज व उ़म्रह के दौरान शर-ई रहनुमाई के लिये बेह़द मुफ़ीद साबित होगा ।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल सीखना भी फ़र्ज़ है

सुवाल : ह़ज व उ़म्रह के लिये ख़रीदारी करने वालों के लिये कुछ म-दनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : जिस त़रह़ सफ़रे ह़ज करने वालों के लिये ह़ज के अह़काम सीखना फ़र्ज़ व ज़रूरी है यूंही ख़रीदो फ़रोख़्त करने वालों के लिये ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल सीखना भी ज़रूरी है चाहे वोह ख़रीदो फ़रोख़्त सफ़रे ह़ज की हो या कोई और । एक ज़माना वोह था कि हर मुसल्मान इतना इ़ल्म रखता था जो उस की ज़रूरिय्यात को काफ़ी होता यहां तक कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म फ़रमा दिया था कि हमारे बाज़ार में वोही ख़रीदो फ़रोख़्त करें जो दीन में फ़क़ीह (आ़लिम) हों ।[1] फ़ी ज़माना इ़ल्मे दीन से दूरी और जहालत के सबब लोग ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल से भी ना वाक़िफ़ हैं येही वज्ह है कि ख़रीदो फ़रोख़्त के दौरान बहुत सारी ख़िलाफ़े शर-अ़ बातों का इरतिकाब कर बैठते हैं ।[2] **रही** बात सफ़रे ह़ज के लिये ख़रीदारी करने की तो इस में और ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है । कोई चीज़ ख़रीदते वक़्त उस का भाव कम करवाने के लिये हुज्जत (Bargaining) करना

---

1 ..... ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ...الخ، ۲/۲۹، حدیث: ۴۸۷ دار الفکر بیروت

2 ..... ख़रीदो फ़रोख़्त के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द दुवुम के ह़िस्सा 11 और जिल्द सिवुम के ह़िस्सा 16 का मुत़ा-लआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

सुन्नत है मगर सफ़रे ह़ज के लिये जो चीज़ ख़रीदी जाए उस में भाव कम नहीं करवाना चाहिये कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : भाव के लिये हुज्जत करना बेहतर है बल्कि सुन्नत । सिवा उस चीज़ के जो सफ़रे ह़ज के लिये ख़रीदी जाए । इस में बेहतर येह है कि जो मांगे दे दे ।[1] ख़ुश नसीब हैं वोह ह़ाजी जो इस मुबारक सफ़र के लिये ख़रीदी जाने वाली चीज़ों का भाव कम करवाने के बजाए मुंह मांगी रक़म अदा कर के मांगने वालों को ख़ुश कर दिया करते हैं ।

इसी त़रह़ सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर क़ुरबान किये जाने वाले जानवर की ख़रीदारी में भी उ़श्शाक़ के अन्दाज़ निराले होते हैं । वोह उस जानवर के भी दाम कम करवाने के बजाए मुंह मांगे दाम अदा करते बल्कि बसा अवक़ात मज़ीद बढ़ा कर भी पेश करते हैं और येह कोई धोका खाना नहीं बल्कि इ़श्क़ की बात है । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने हर उस ग़ुलाम को आज़ाद फ़रमा देते जो ब कसरत इ़बादत करता लिहाज़ा ग़ुलाम भी ख़ूब इ़बादत करते और रिहाई पाते । किसी ने अ़र्ज़ की, कि ग़ुलाम रिहाई पाने के लिये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने ज़ियादा इ़बादत करते हैं । फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर धोका देने वाले से हम धोका खाने के लिये तय्यार हैं ।[2]

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 17/128

2 ..... تفسیر کبیر، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۲۲، ۵/ ۲۲۰ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

तेरे नाम पर हो क़ुरबां मेरी जान जाने जानां
हो नसीब सर कटाना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश)

बार बार ह़ाज़िरी का शौक़ तड़पाए तो क्या करना चाहिये ?

सुवाल : फ़र्ज़ ह़ज अदा कर लेने के बा'द किसी आ़शिक़े ज़ार को बार बार ह़ाज़िरी का शौक़ तड़पाए तो वोह क्या करे ?

जवाब : फ़र्ज़ ह़ज अदा कर लेने के बा वुजूद अगर किसी आ़शिक़े ज़ार को बार बार ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी का शौक़ तड़पाए तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के भरोसे पर इस त़रह़ तय्यारी करे कि दिलो दिमाग़, ज़बान व आंख और हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना लगाए या'नी अपने तमाम आ'ज़ा को गुनाहों से बचाने की भरपूर सअ़्य करे । अपने अन्दर इख़्लास पैदा करे और रियाकारी लाने वाले अस्बाब से बचे । आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल बढ़ाने और इस्तिक़ामत पाने के लिये फ़िक्रे मदीना करते हुए रोज़ाना म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना ले । नफ़्स की ख़ात़िर की जाने वाली ज़ाती दोस्तियां तर्क कर के अच्छी सोह़बत इख़्तियार करे, कम बोलने और निगाहें नीची रखने की ख़ास मश्क़ करे, ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के आदाब सीखे, अपनी बे मा-यगी, ना अहली और गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हुए **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ की

www.dawateislami.net

बारगाह में ख़ूब इस्तिग़्फ़ार करे और तौफ़ीक़े ख़ैर की ख़ैरात मांगे। रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रह़मत व इस्तिक़ामत की भीक त़लब करे। जब ज़ाहिरी अस्बाब का इन्तिज़ाम हो जाए और दिल भी मुत्मइन हो कि अब मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का ह़त्तल इम्कान अदब कर पाऊंगा और क़स्दन गुनाहों का सुदूर भी नहीं होगा तो अब ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के सफ़र की तय्यारी करे।

अगर अस्बाब न बन पाएं तो ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا जाने वालों को ब नज़रे रश्क देखें, उन से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल करें और उन से सलामे शौक़ अ़र्ज़ करने और दुआए मग़्फ़िरत व ह़ाज़िरी की आ़जिज़ाना इल्तिजा करें। अगर क़रीबी अ़ज़ीज़ हों तो उन्हें रुख़्सत करने जाएं तो अपना यूं म-दनी ज़ेहन बनाएं कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी तो करम होगा हम भी मदीने जाएंगे।

मदीने जाने वालो ! जाओ जाओ फ़ी अमानिल्लाह
कभी तो अपना भी लग जाएगा बिस्तर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश)

ह़-रमैने त़य्यिबैन में ज़ियादा दिन क़ियाम करना कैसा ?

सुवाल : उ़म्रे के लिये जाने वालों का ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ज़ियादा दिन क़ियाम करना कैसा है ?

जवाब : उ़म्रे के लिये जाने वाले अगर वहां के आदाब बजा लाते और अपने आप को गुनाहों से बचा पाते हों तो उन के लिये ज़ियादा

www.dawateislami.net

अय्याम गुज़ारना बाइ़से सआ़दत है । ज़ियादा मुद्दत क़ियाम करने से उ़मूमन लोगों के दिलों से अहम्मिय्यत ख़त्म हो जाती है और वोह गुनाहों पर बेबाक हो जाते हैं लिहाज़ा ऐसों को चाहिये कि कम से कम मुद्दत क़ियाम करें म-सलन उ़म्रह के लिये जाएं तो एक दिन में उ़म्रह शरीफ़ अदा करें, फिर फ़ौरन सरकारे अबद क़रार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की बारगाहों में ब ग़-रज़े सलाम एक दिन के लिये मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हों । मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में नमाज़ें पढ़ें, सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा व शु-हदाए उ़हुद رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की बारगाहों में सलाम अ़र्ज़ करने जाएं । जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ में आराम कुनन्दगान की ख़िदमात में भी सलाम अ़र्ज़ करें । ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मौत से हम-आग़ोश होने की सआ़दत मिलने की सूरत में बक़ीए़ पाक में "मुस्तक़िल दाख़िला" की इजाज़त मिल जाए तो ज़हे क़िस्मत वरना बे अ-दबी और गुनाहों से बच न पाने के बाइ़स अगर ज़मीर मलामत करता हो तो बक़ीअ़ शरीफ़ पर ह़सरत भरी नज़र डालते हुए अल वदाई सलाम पेश कर के रोते हुए वत़न रवाना हों ।

मैं शिकस्ता दिल लिये बोझल क़दम रखता हुवा
चल पड़ा हूं या शहनशाहे मदीना अल वदाअ़

(वसाइले बख़्शिश)

ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में कम मुद्दत की ह़ाज़िरी को हरगिज़ हरगिज़ कम तसव्वुर न कीजिये । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

क़सम ! वहां की ह़सीन वादियों में गुज़रा हुवा एक लम्ह़ा दुन्या के ज़ाहिरी सर सब्ज़ो शादाब गुलज़ार की हज़ार सालह ज़िन्दगी से बेहतर ही नहीं बल्कि बेहतरीन है ।

वोही साअ़तें थीं सुरूर की वोही दिन थे ह़ासिले ज़िन्दगी
ब ह़ुज़ूरे शाफ़ेए़ उम्मतां मेरी जिन दिनों त़-लबी रही

नापाक कपड़ों में नमाज़ का हुक्म

सुवाल : ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَهُمَااللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا या किसी भी जगह पर त़हारत ख़ानों के सह़ीह़ न बने होने की वज्ह से कपड़ों का पाक रहना मुश्किल होता हो तो ऐसी सूरत में अगर किसी ने उन कपड़ों में ही नमाज़ पढ़ ली तो उस के लिये शरअ़न क्या हुक्म है ?

जवाब : त़हारत ख़ानों के वाक़ेई सह़ीह़ न बने होने की वज्ह से अपने आप को पाक रखना और गुनाहों से बचाना बहुत मुश्किल होता है । आज कल W.C की जगह "कमोड" ने ले ली है इस में भी कहीं क़िब्ले को पीठ होती है तो कहीं मुंह होता है ह़ालां कि 45 डिग्री के ज़ाविये के अन्दर अन्दर क़िब्ले को मुंह या पीठ कर के इस्तिन्जा करना ह़राम है और ह़-रमे मक्का में एक बार का किया हुवा ह़राम काम लाख बार ह़राम काम करने के मु-तरादिफ़ है । अगर ह़म्माम में फ़व्वारा (Shower) हो तो उसे अच्छी त़रह़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगा नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ले शरीफ़ की त़रफ़ तो नहीं हो रही । क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45 डिग्री द-रजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो लिहाज़ा येह एह़तियात़ भी ज़रूरी है कि 45 डिग्री के ज़ाविये (एंगल Angle)

www.dawateislami.net

के बाहर हो । मसाजिद के ह़म्माम में W.C होते हैं मगर रुख़ दुरुस्त होने की कोई गारन्टी नहीं होती नीज़ त़हारत के लिये लोटे के बजाए "पाइप सिस्टम" होता है जिस के बाइ़स गन्दी छींटों से ख़ुद को बचाना बेह़द दुश्वार है ।

बहर ह़ाल "नजासते ग़लीज़ा अगर कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है, बे पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं और क़स्दन पढ़ी तो गुनाह भी हुवा और अगर ब निय्यते इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी नमाज़ को हलका जान कर) है तो कुफ़्र हुवा और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो मक्रूहे तह़रीमी हुई या'नी ऐसी नमाज़ का इआ़दा वाजिब हुवा और क़स्दन पढ़ी तो गुनहगार भी हुवा और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई और इस का इआ़दा बेहतर है ।" और "नजासते ख़फ़ीफ़ा का येह हुक्म है कि कपड़े के ह़िस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है, अगर उस की चौथाई से कम है (म-सलन दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम, आस्तीन में इस की चौथाई से कम । यूंही हाथ में हाथ की चौथाई से कम है) तो मुआ़फ़ है कि इस से नमाज़ हो जाएगी और अगर पूरी चौथाई में हो तो बे धोए नमाज़ न होगी ।"[1]

ख़याल रहे सिर्फ़ नजासत लगने का शक होने से कपड़े वग़ैरा नापाक नहीं हो जाते जब तक यक़ीन न हो जाए और यक़ीन हो

1 ..... बहारे शरीअ़त, 1/389, ह़िस्सा : 2, मुल-त-क़त़न

www.dawateislami.net

जाने की सूरत में नमाज़ को हलका जानते हुए अदा करना नमाज़ की तौहीन और कुफ़्र है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़्हा 282 पर है : नमाज़ के लिये त़हारत ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि बे (या'नी बिग़ैर) इस के नमाज़ होती ही नहीं बल्कि जान बूझ कर बे त़हारत नमाज़ अदा करने को उ़-लमा कुफ़्र लिखते हैं और क्यूं न हो कि इस बे वुज़ू या बे ग़ुस्ल नमाज़ वाले ने इबादत की बे अ-दबी और तौहीन की ।[1]

मस्जिदैने करीमैन में सफ़ाई के लिये मुला-ज़मत इख़्तियार करना

सुवाल : जो लोग मस्जिदैने करीमैन में सफ़ाई के लिये मुला-ज़मत इख़्तियार करते हैं उन के बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : मस्जिदें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर हैं, इन्हें साफ़ सुथरा रखने का हुक्म दिया गया है । मस्जिद की सफ़ाई व सुथराई करने वाला गोया अपने दिल की सफ़ाई कर रहा है और मस्जिदैने करीमैन जो अफ़्ज़लुल मसाजिद हैं इन की सफ़ाई करने वालों की शान के क्या कहने ! ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़बैदुल्लाह** बिन मरज़ूक़

1..... मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "कपड़े पाक करने का त़रीक़ा मअ़ नजासतों का बयान" दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ा-लआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मदीने शरीफ़ में एक औ़रत मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी । जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस के बारे में ख़बर न दी गई । एक मर्तबा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : येह किस की क़ब्र है ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : उम्मे मिह़जन की । इर्शाद फ़रमाया : वोही जो मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जी हां । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को उस की क़ब्र पर सफ़ बनाने का हुक्म दिया और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ।[1] फिर उस औ़रत को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : तू ने कौन सा काम सब से अफ़्ज़ल पाया ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** क्या येह सुन रही है ? इर्शाद फ़रमाया : तुम इस इस से ज़ियादा सुनने वाले नहीं हो । रावी बयान करते हैं कि फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

مدینہ

1 ..... **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : क़ब्र पर नमाज़ (जनाज़ा) जाइज़ है जब ग़ालिब (गुमान) येह हो कि अभी मय्यित मह़फ़ूज़ होगी, गली फटी न होगी । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सारे मुसल्मानों के वली (सर परस्त) हैं, रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ﴿اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ﴾ (پ۲۱، الاحزاب:۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "येह नबी मुसल्मानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है ।" अगर वली के इलावा और लोग नमाज़ पढ़ लें तो वली को दोबारा जनाज़ा पढ़ने का ह़क़ है । देखो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उस मय्यित पर नमाज़ पढ़ ली थी मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा पढ़ी, वली के नमाज़ पढ़ लेने के बा'द और किसी को जनाज़ा पढ़ने का ह़क़ नहीं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/472, 473 मुल-त-क़त़न, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

www.dawateislami.net

फ़रमाया : इस ने मेरे सुवाल के जवाब में कहा : मस्जिद की सफ़ाई को ।(1)

ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَھُمَااللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से वक़्तन फ़ वक़्तन और बिल ख़ुसूस ह़ज के मौसिमे बहार में दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक से चार माह के लिये ख़ुद्दाम बुलाए जाते हैं, लोग बड़े ज़ौक़ो शौक़ के साथ पहुंचते हैं। मस्जिदैने करीमैन में ख़िदमत का मौक़अ़ मिल जाना इसी सूरत में सआ़दत है जब कि वहां के आदाब और ता'ज़ीमो तौक़ीर में फ़र्क़ न आने पाए और न ही काम में किसी क़िस्म की कोई कोताही वाक़ेअ़ हो। एक बार एक नौ जवान ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَھُمَااللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की ज़ियारत के शौक़ में चार माह के लिये बत़ौरे ख़ादिम भरती हो गया, जब उस ने वहां की बे अ-दबियां और बे बाकियां देखीं तो समझ गया कि येह सब कुछ मुझ से भी सादिर हो कर रहेगा तो वोह घबरा गया और उस पर गिर्या त़ारी हो गया। उस ने सारा कामकाज छोड़ कर रोने की ''ड्यूटी'' संभाल ली, यहां तक कि बुलाने वालों ने तंग आ कर ख़ुरूज लगवा कर उसे वत़न रवाना कर दिया !!

संभल कर पाउं रखना ज़ाइरो मक्के मदीने में
कहीं ऐसा न हो सारा सफ़र बेकार हो जाए

---

1 ...... الترغیب والترھیب، کتابُ الصلٰوۃ، الترغیب فی تنظیف المساجد...الخ، ۱/۱۲۲، حدیث: ۴دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	मस्जिदैने करीमैन में दुन्यवी बातें और शोरो गुल करना	20
ख़ाके मदीना वत़न में लाना कैसा ?	2	मस्जिदैने करीमैन में खाना पीना कैसा ?	22
खजूर का तना फ़िराक़े रसूल में रो दिया	4	सालन में पकी हुई इलायची खाने का हुक्म	23
रोने वाला संगरेज़ा	5	ह़ालते एह़राम में ख़ुश्बूदार साबुन का इस्ति'माल	24
मुज़्दलिफ़ा की अश्कबार कंकरियां	6	ह़ज के अह़काम सीखना फ़र्ज़ है	24
ख़ाके मदीना का तोह़फ़ा	7	ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल सीखना भी फ़र्ज़ है	27
तबर्रुकात का अदब कीजिये	7	बार बार ह़ाज़िरी का शौक़ तड़पाए तो क्या करना चाहिये ?	29
नफ़्ली ह़ज अफ़्ज़ल है या स-द-क़ए नफ़्ल ?	9	ह़-रमैने त़य्यिबैन में ज़ियादा दिन क़ियाम करना कैसा ?	30
100 नफ़्ली ह़ज से अफ़्ज़ल अ़मल	10	नापाक कपड़ों में नमाज़ का हुक्म	32
रिज़ाए इलाही के साथ साथ दिखावे के लिये अ़मल करना	11	मस्जिदैने करीमैन में सफ़ाई के लिये मुला-ज़मत इख़्तियार करना	34
आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करना	14		
पैदल सफ़रे ह़ज की फ़ज़ीलत	16		
ह़ज व उ़म्रे के कारवान और दा'वते इस्लामी	16		
हवाई जहाज़ में गुनाहों का ख़त़रा	18		
बद निगाही करने और करवाने वालियां	18		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ**" अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133050

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net